# प्रातः काल कर–दर्शन क्यों ,

उपर्युक्त प्रातःस्मरण श्लोकों का पाठ करने के बाद दोनों हाथों से एक–दूसरे को स्पर्श करते हुए निम्नवत श्लोक बोलें–

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम्।।

हाथों के अग्र भाग में लक्ष्मी का निवास है, हाथों के बीच में सरस्वती बसती हैं और हाथों के मूल में स्वयं गोविन्द विराजमान रहते हैं। अतएव इस श्लोक को पढ़ते हुए हाथों के दर्शन करें।

हाथों को कर्मों का प्रतीक रूप माना गया है। कर्मों को सम्पन्न करने मेंलक्ष्मी और सरस्वती अर्थात धन एवं बुद्धि (ज्ञान) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विष्णु सृष्टि के पालनकर्ता हैं। श्री विष्णु, ज्ञान और लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए हमारी समस्त क्रियाएं हों – यही कर–दर्शन का संदेश है। इसके अलावा भाग्य का निर्माण भी हाथों अर्थात कर्म द्वारा ही किया जाता है।

★★★